Vol II Issue VIII Feb 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 8, Feb. 2013
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

'साहित्य में यथार्थ का पाश्चात्य दृष्टीकों'

जस्सी जोस

(शोधकर्ता)
सहायक प्राध्यापक काइस्ट कॉलेज़ जगदलपुर (छत्तीसगढ)

सारांशः

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में यथार्थवाद और आदर्शवाद अति महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं | कुछ समीक्षकों की दृष्टी में प्रणीत प्रत्येक सिद्धान्त इन दोनों विचारधाराओं में से किसी एक से निश्चित रूप से सम्बद्ध है | यथार्थवाद वह दार्शनिक विचारधारा है जो पदार्थों के स्वतन्त्र अस्तित्व में विश्वास करता है | यह सिद्धान्त प्रत्ययवाद या आदर्शवाद की इस मान्यता का खण्डन करता है कि वस्तुओं का अस्तित्व मानव मन पर निर्भर करता है | यथार्थवाद के अनुसार जो भी सत्है इस अर्थ में सत्है कि इसका अस्तित्व है यह इन्द्रिय प्रत्यक्ष का विषय है और इसका अस्तित्व किसी मस्तिष्क से स्वतंत्र या निरपेक्ष है | यथार्थवाद को व्यापक दृष्टिकोण से दो भागों में विभाजित करने की परम्परा है - (1) सामान्य बुद्धि यथार्थवाद और (2) दार्शनिक यथार्थवाद | सामान्य बुद्धि यथार्थवाद यह विश्वास करता है कि मानव स्वभावतः ही यथार्थवादी होता है | वह यह स्वीकार करता है कि संसार की वस्तुएं हमारे मन से बाहर हैं और हम उनको ठीक उसी रूप में जानतो हैं जिस रूप में वे हैं | यह सिद्धांत प्रत्ययवाद के विपरीत यह प्रतिपादित करता है कि वस्तुएं उस समय भी अस्तित्व में रहती हैं जब उनका बोध या ज्ञान किसी को नहीं होता | प्रकार हम कह सकते हैं कि सामान्य बुद्धि यथार्थवाद के अनुसार ज्ञान या विषय का ज्ञेय ज्ञाता के ज्ञान से बिल्कुल निरपेक्ष या स्वतन्त्र है | हमें बाह्य वस्तुओं का इन्द्रियों द्वारा साक्षात्प्रत्यक्ष होता है | अतः वस्तुओं के स्वरूप का ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त होता है | पुनः हमारा मन या बुद्धि वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करती है |

प्रस्तावना :

यथार्थवाद का दूसरा रूप दार्शनिक यथार्थवाद यह स्वीकार करता है कि बाह्य वस्तुओं की सत्ता किसी ज्ञाता पर आधारित नहीं है अर्थात्वस्तुओं का अस्तित्व उनके ज्ञान से निरपेक्ष है | इस प्रकार के यथार्थवाद के मुख्यतः तीन रूप प्रचलित हैं - (1) प्रातिनिधानात्मक यथार्थवाद ह्य2ह नव्य यथार्थवाद और (3) समीक्षात्मक यथार्थवाद ऽ दर्शन के एक विशिष्ट सिद्धांत के रूप में यथार्थवाद वह दार्शनिक सिद्धांत है जो यह मानता है कि वस्तुयें ज्ञान से स्वतंत्र सत्ता रखती हैं | ज्ञान के उदय से उनका अस्तित्व नहीं होता और न ज्ञान के अन्त से उनका अन्त होता है | उनकी स्वतन्त्र सत्ता हैं | इसी को दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि विश्व में यथार्थ स्वतन्त्र तथा अस्तित्ववान वस्तुयें हैं वे कमिकता से संचारित तथा संबंधित हैं और उनसे एक पूर्ण विश्व की रचना हुई है जिसमें अर्थपूर्ण तथा व्यवस्थित जीवन मनुष्य के लिए संभव है | यथार्थवाद का स्त्रोत यूनानी दार्शनिक परम्परा में प्राप्य है जिसमें से प्लेटो और अरस्तू की विचरधारा का विशेश रूप से स्थान है | आज भी इस दार्शनिक परम्परा को दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है | ज्ञान - प्राप्ति में बुद्धि की प्रधानता पर प्लेटो और अरस्तू ने समान रूप से बल दिया था | यूनानी परम्परा में विश्व को सुव्यवस्थित और सुनियोजित माना गया है जिसमें मानव का जीवन सुचारू रूप से संभव हो पाता है | यहॉं पर माना गया है कि वैधानिक और शुभ होने के लिए जीवन और समाज को सुव्यवस्थित होना चाहिए |

अरस्तू ने उस जमाने में जब यथार्थवाद का कला की खास विधि के रूप में विकास नहीं हुआ था कला में यथार्थ के चित्रण के प्रति दृष्टिकोण में संभावित विविधताओं की ओर संकेत किया था | वे कहते हैं "कलाकार को या तो चीजें जैसी थीं या हैं वैसी ही पेश करनी चाहिए या जैसी सोची गई थीं या सोची जा रही हैं या जैसी कि अभीष्ट हैं वैसा पेश करनी चाहिए |"

अरस्तू ने एक सुसामंजस्यपूर्ण और सुव्यवसथित विश्व की परिकल्पना की है | यह विश्व अज्ञेय न होकर ज्ञेय है तथा बुद्धि के द्वारा उस विश्व के संबंध में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है | नियमितताये़ं नियम और विश्व के सिद्धांत स्वयं बौद्धिक सिद्धांत आदि बुद्धि या मनस द्वारा जाने जा सकते हैं | वास्तव में देखा जाये तो जीवन विरोधपूर्ण लक्षणों से मुक्त प्रतीत होता है परन्तु अर्थपूर्ण सामंजस्यपूर्ण नियमपूर्ण और व्यवस्थित जीवन की संभावना के लिए बुद्धितत्व का ही आश्रय लेना पड़ता है |

पारम्परिक यथार्थवाद ने यूनायी विचारधारा के बाद प्रारंभिक और मध्यकालीन ईसाई विचारधारा से भी प्रेरणा ग्रहण की | मध्यकालीन विचारधारा में यूनानी मान्यताओं को दैवींप्रकाशना तथा सृष्टिकर्ता - अवतारी ईश्वर की संकल्पना से संबंधित किया गया | यूनानी परम्परा में स्वीकृत 'सार्वभौम' की संप्रत्यय के स्थान पर दैवी सत्ता को मध्यकालीन विचारधारा में विशेष स्थान दिया गया | यह दैवी सत्ता अन्य प्राणियों की सृष्टी करती है तथा सभी सिद्धांतो विधानों और व्यवस्थाओं से परे है | यह बुद्धि का विषय नहीं है | इस युग में आस्था और चर्च की संस्था को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है |

यथार्थवादियों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या है सार्वभौम में अन्य सत्ताओं के साथ व्यक्ति और समाज के स्थान को निर्धारित करना | इस समस्या की समुचित विवेचना के लिए 'सत्' शब्द का अर्थ ठोस ह्यपदार्थह वैयक्तिक अस्तित्वमय वस्तुओं से लिया है जैसे कलम भवन मानव आदि | अरस्तू ने इसे स्पष्ट करने के लिए द्रव्य शब्द का प्रयोग किया | उनके अनुसार प्रत्येक द्रव्य किसी न किसी वस्तु से निर्मित होता है जिसे उपादान कारण कहा जाता है | इसके पश्चात वह वस्तु किसी सत्ता या वस्तु से निर्मित होता है जिसे उपादान कारण कहा जाता है | इसके पश्चात वह वस्तु किसी सत्ता या शक्ति द्वारा अस्तित्व में लायी जाती है जिसे पर्याप्त कारण

कहते हैं | पुनः प्रत्येक वस्तु का एक विशिष्ट गुण होता है जो कि एक ही वर्ग की वस्तुओं में सामान्य रूप से पाया जाता है जिससे यह निर्धारित होता है कि वह वस्तु वही वस्तु है अन्य वस्तु नहीं है | इसे अकारिक कारण कहा जाता है ऽ इसके पश्चात अंतिम कारण आता है जो कि वस्तु का पूर्णरूप है |

अरस्तू की धारणा थी कि प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु किसी वर्ग या श्रेणी से संबद्ध होता है और उसका प्रयास होता है कि वह उसी की ही तरफ पूर्णता को प्राप्त कर ले | दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि प्रत्येक वस्तु पूर्णता की ओर अग्रसर रहती है | किसी वस्तु का वास्तविक स्वरूप उसकी पूर्णता प्राप्ति में निहित होता है | इस प्रकार किसी वस्तु का स्वरूप अरस्तू के शब्दों में उसकी क्षमताओं के पूर्ण विकास में या पूर्णतांप्राप्ति में ही निहित होता है |**1**

यथार्थवादी विचारक अरस्तू की इस धारणा के स्वीकार करके इसे आधार स्वरूप मानते हैं | क्योंकि प्रत्येक वस्तु पूर्णता की ओर अग्रसर होती है जो कि उसका लक्ष्य होता है इसीलिए कोई विशेष वस्तु पूर्णसत्ता नहीं कही जा सकती | उसमें अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करने की क्षमता निहित होती है और जब कोई वस्तु अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति कर लेती है तो वह वास्तविक कहलाती है अर्थात्उसका वह पूर्ण स्वरूप ही वास्तविक स्वरूप कहलाता है | इस प्रकार 'क्षमता' को अपूर्णता के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है और वास्तविकता को पूर्णता के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है | किसी वस्तु का वास्तविक स्वरूप ही पूर्ण सत्कहलाता है अर्थात्उसकी पूर्ण सत्ता होती है |

आधुनिक साहित्य में यथार्थवाद जिन अर्थो में प्रयुक्त किया जा रहा है वह एकमात्र पाश्चात्य साहित्य की देन है | समाज में साहित्य और साहित्य से समाज के प्रभावित होने के कारण जब कभी दोनों में से एक की अवस्थाओं में परिवर्तन होता है तो एक का प्रभाव अनिवार्य रूप से दूसरे पर पड़ ही जाता है | **19** वीं और **20** वीं शताब्दी के मध्य में यूरोप के अंदर सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों में अनेक मोड़ उपस्थित हुए | जिनके परिणामस्वरूप साहित्य की विचारधाराओं में अनेक प्रकार के परिवर्तन आये | युग की आवश्यकताओं ने ही साहित्य में यथार्थवाद को जन्म दिया | इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इसके पूर्व साहित्य में यथार्थ था ही नहीं ऋ यथार्थ तो साहित्य का प्राण है | विना शाश्वत सत्य के साहित्य चिरंजीवी हो ही नहीं सकता | यथार्थ के अभाव में जिस साहित्य का निर्माण होगा वह मरणोन्मुख तथा अस्थायी ही होगा परंतु यह 'यथार्थवाद' नहीं था जिसका रूप हमारे सामने आज है |

19 वीं शताब्दी में विश्व साहित्य धीर्रेधीरे मानव की दैनिक समस्याओं उसके वास्तविक जीवन तथा एक विशेष विकासशील देशों के निकट आया जिसका निर्माण पश्चिमी यूरोप के ऐतिहासिक यथार्थवाद के द्वारा हुआ | फ्रांस की राज्यकांति से समाज के विकास की जो रूपरेखा बनी उसने पढ़ेलिखे लोगों की महत्वाकांक्षा साहित्य और उनके समय की जनता में विग्रह उत्पन्न कर दिया | इस काल में वही लेखन महान बन सकता था जो नवीनतम समस्याएं लेकर दैनिक जीवम को चित्रित करता | इसके अतिरिक्त मानवजीवन पर अन्य नूतन ज्ञानविज्ञानों का प्रभाव भी पड़ा जिससे जीवन को यथार्थ रूप में देखने की दृष्टीयों में भी भेद आये | साहित्य के इस यथार्थ रूप को निश्चित करने में इनद्वद्य प्रभावों का भी महत्वपूर्ण योग है |

मार्क्स समाज में दो तरह के वर्ग मानता है एक सर्वहारा वर्ग और दूसरा शोषक वर्ग | इन्हीं सर्वहारा वर्ग की समस्याओं के समर्थन में लिखे गये साहित्य को यथार्थवादी साहित्य के रूप में स्वीकार करता है जिसके अन्दर समस्याओं कठिनाइयों एवं परिस्थितियों का वास्तविक चित्र हो उसे ही समाजवादी यथार्थवाद का रूप दिया गया है |

हिन्दी साहित्य की आधुनिक प्रमुख विचारधाराओं पर यूरोपीय साहित्य का अत्याधिक प्रभाव है | भारत में अंग्रेजी राज्य और अंग्रेजी शिक्षा के बढ़ते हुए महत्व के कारण हिन्दी के साहित्यकार यूरोपीय साहित्य के सम्पर्क में आये | जर्मनी में सर्वप्रथम 'गेटे' ने मध्यवर्ग के परिवार के नायक को सामाजिक पृष्ठभूमि पर लाकर खड़ा किया | गेटे के वाद यह विचारधारा फ्रांस की ओर मुड़ी जी ब्रिटेन में जाकर स्कॉट के ऐतिहासिक उपन्यासों में वदल गयै | फ्रांस के 'स्तादल' ने पूंजीपति वर्ग की (सोन्मुखी दशाओं का वर्णन किया | इसके पश्चात 'वाल्जाक' पहला व्यक्ति था जिसने नवीनतम समस्याओं को लेकर दैनिक जीवन को चित्रित करने के महत्व को परखा | 'फ्लावेयर' ने साहित्य्यकारों से मॉग की कि दैनिक जीवन के छोटेंछोटे एवं नगण्य चित्रों को कला के द्वारा साहित्य के उच्च स्तर पर चित्रित करें और उसने स्वयं तथाकथित उदात्त भावनाओं की झुठाई की पोल खोली |

'फ्लावेयर' के समय में 'विक्टरहूगो' ने नये प्रयोग किये | 'पेरिस का कुवड़ा' तथा 'अभागे' नामक उपन्यासों में केवल उसने उपेक्षित तथा निम्नस्तर के पात्रों की हीन अवस्था का ही चित्रण नहीं किया वल्कि मानवीय मर्यादा तथा आत्मगौरव की प्रवृत्तियों को भी उसने उभारकर सामने रखा | 'जोला' के नये प्रयोग केवल प्रयोग के लिए ही किये गये | उसकी दृष्टि 'प्रकृतवादी' थी | फ्रांस के वाद यथार्थवादी साहित्य का सच्चा रूप रूस में जाकर प्रकट हुआ | 'वाल्जक' की सभी समस्याओं को रूस के 'टालस्टाय' ने और भी अच्छे ढंग से अपनाया | अस्तु पूंजीवादी समाज के उस घोर साहित्यिक आपातकाल में आशा की जो पहली किरण फूटी वह थी उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रूसी उपन्यास का उदय | 'तुर्गनिव्' 'टालस्टाय' और 'डास्ताएव्सकी' ने जो यथार्थ देखा और अंकित किया वह उनके 'फ्रांसीसी आचार्यों' की अपेक्षा कई गुना अधिक सजीव जीवन के अधिक निकट अधिक सहज़ अधिक स्पर्श्य और अधिक मार्मिक था |**2** टालस्टाय के यथार्थवाद में मनुष्य की शर्तशत दुर्वलताओं भूलों और भ्रान्तियों के वावजूद महामानव के भीतर निहित आत्मिक शक्तियों की विजय पर विश्वास पाया जाता है |

गोर्की के उपन्यासों में सर्वहारा वर्ग की अवस्था का चित्रण हुआ | इस प्रकार उसके यथार्थवाद में वास्तविक चित्रण के सार्थसाथ सामाजिक संघर्षो के भी चित्र मिलने लगे जिन्होंने एक नयी सामाजिक कान्ति की रूपरेखा स्पष्ट की और धीर्रेधीरे 'मार्क्स' के सिद्धांतों को प्रमुख स्थान मिला जिसका आधार समाज की आर्थिक व्यवस्था है | उन रूसी उपन्यासकारों की सवसे वढ़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने जारयुगीन दुर्दान्त शासन की आपदाओं के वीच भी 'सामूहिक मानवीय चेतना के उत्तरोत्तर विकास संवंधी अपने सहज विश्वास को' कभी डिगने न दिया | इसी महान परम्परा में आगे चलकर गोर्की ने अपना महानतर योग दिया |

इसके साथ ही साथ सर्वहारा वर्ग की सत्ता स्थापित हो जाने पर हारे हुए पूंजीपतिवर्ग के लोगों ने निराश हो 'फ्रायड' के सिद्धांतों की शरण ली तथा उन लोगों ने धीर्रेधीरे पाशविक आदिम प्रवृत्तियों को अपनाना आरंभ कर दिया |

विज्ञान के वरदान तथा विदेशी साहित्य के सम्पर्क में आने के कारण यूरोपीय साहित्य की ये आधुनिकतम प्रवृत्तियॉ अवसरानुकूल हिन्दी साहित्य के अन्दर भी अभिव्यक्त हुई | 'भारतेन्दु' हरिश्चन्द्र ने यथार्थ की जिस प्रवृत्ति को अपने साहित्य में स्थान दिया उसका आज तक निरन्तर विकास होता चला आ रहा है |

संदर्भ ग्रंथ :-

1 . शिवभानु सिंह - समाज दर्शन का परिचय पृष्ठ सं . **410**
2 . विभुवन सिंह - हिन्दी उपन्यास यथार्थवाद पृष्ठ स . **33**

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net